

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

(Rishi Vishwamitra Vidya Foundation)

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | सम्पर्क: 8756390767

ऋग्वेद प्रथम मण्डल, प्रथम सूक्त (अग्नि सूक्त) - मन्त्र ८

ॐ राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् ।
वर्धमानं स्वे दमे ॥८॥

पदपाठः राजन्तम् । अध्वराणाम् । गोपाम् । ऋतस्य । दीदिविम् । वर्धमानम् । स्वे । दमे ॥

१. शब्दार्थ (Word Meanings)

राजन्तम् (Rajantam): प्रकाशमान / चमकते हुए / दीप्तिमान।

अध्वराणाम् (Adhvaranam): हिंसारहित यज्ञों के / धार्मिक मनुष्यों के।

गोपाम् (Gopam): रक्षक / पालन करने वाले।

ऋतस्य (Ritasya): सत्य के / अवश्यंभावी कर्मफल के / सनातन प्राकृतिक नियमों के / वेदविद्या के।

दीदिविम् (Didivim): बार-बार अथवा निरन्तर प्रकाशित करने वाले / सर्वप्रकाशक।

वर्धमानम् (Vardhamanam): बढ़ते हुए / हास (कमी) से रहित।

स्वे दमे (Sve Dame): अपने घर में / अपनी यज्ञशाला में / परमानन्द के पद (मोक्ष) में।

२. आचार्यों के अनुसार मन्त्र का अर्थ (Translations)

आचार्य सायण के अनुसार (याज्ञिक/कर्मकाण्ड अर्थ):

(पूर्व मन्त्र 'हम आपके समीप आते हैं' से जोड़कर) हे अग्निदेव! आप दीप्तिमान हैं, राक्षसों द्वारा की जाने वाली हिंसा से रहित हमारे यज्ञों के रक्षक हैं, सत्यरूप (अवश्य मिलने वाले) कर्मफलों को प्रकाशित करने वाले हैं। आप अपने घर (यज्ञशाला) में हमारी हवियों (आहुतियों) के द्वारा निरन्तर बढ़ने वाले हैं; हम आपके समीप आते हैं।

महर्षि दयानन्द के अनुसार (आध्यात्मिक/यौगिक अर्थ):

जो परमेश्वर (या भौतिक अग्नि) सर्वत्र प्रकाशमान है, अहिंसक यज्ञों और धार्मिक मनुष्यों का रक्षक है, सत्य और सर्वविद्या-युक्त चारों वेदों (तथा जगत् के कारणों) का प्रकाशक है; जो कभी क्षीण नहीं होता बल्कि सदा वर्धमान है, और "स्वे दमे" अर्थात् जिसमें समस्त दुखों का शमन हो जाता है, ऐसे परमानन्द स्वरूप स्व-स्थान (मोक्ष) में विराजमान है, हम उसकी उपासना करते हैं।

३. मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

विज्ञान के अनुसार "अग्नि" ऊर्जा (Energy/Thermodynamics) का प्रतीक है।

- राजन्तम्:** ऊर्जा का मूल स्वभाव है प्रकाशित होना या विकिरित (Radiate) होना।
- अध्वराणाम् गोपाम्:** 'अध्वर' का अर्थ है अविनाशी या हिंसारहित। यह ऊष्मागतिकी के प्रथम नियम (Law of Conservation of Energy) की ओर संकेत करता है कि ऊर्जा का कभी नाश नहीं होता, वह ब्रह्माण्ड के रचनात्मक कार्यों की रक्षा करती है।
- ऋतस्य दीदिविम्:** 'ऋत' ब्रह्माण्ड के अटल प्राकृतिक नियमों (Cosmic/Physical Laws) का प्रतीक है। अग्नि/ऊर्जा ही इन प्राकृतिक नियमों (जैसे गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश-संश्लेषण आदि) को सक्रिय और दृश्यमान बनाती है।
- वर्धमानं स्वे दमे:** अग्नि अपने उद्गम स्थान (जैसे सूर्य या परमाणु रिएक्टर) में निरंतर बढ़ती (Chain reaction) और पोषित होती है। यह ऊर्जा के अपने क्षेत्र (Field) में विस्तार (Expansion) का वैज्ञानिक सूत्र है।

४. व्याकरण एवं निरुक्ति (Grammar Derivation)

आचार्यों के भाष्यों के आधार पर इस मन्त्र की व्याकरणिक संरचना इस प्रकार है:

राजन्तम् / वर्धमानम्: इन दोनों पदों में 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्यय होने से पूर्ववत् धातुस्वर ही शेष रहता है।

दीदिविम्: 'दिवु' धातु से उणादि सूत्र (४.५५) 'दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य' से 'क्विन्' प्रत्यय हुआ है। पाणिनीय सूत्र 'अभ्यस्तानामादिः' (६.१.१८९) के अनुसार इसका आदि स्वर उदात्त (आद्युदात्त) होता है।

दमे: 'दमु' (उपशमने) धातु से 'हलश्च' (अष्टाध्यायी ३.३.१२१) सूत्र द्वारा अधिकरण कारक में 'घञ्' प्रत्यय लगा है। 'वृषादित्वात्' (६.१.२०३) सूत्र से यह पद आद्युदात्त है। इसका अर्थ है- वह स्थान जहाँ दुखों का दमन (उपशम) हो जाए (दाम्यन्ति उपशाम्यन्ति दुःखानि यस्मिन्)।

५. आचार्य सायण के अनुसार मन्त्र का दैनिक उपयोग (Daily Uses)

सायणाचार्य के भाष्य के अनुसार इस मन्त्र का दैनिक जीवन और कर्मकाण्ड में गहरा उपयोग है:

- कर्मफल पर अटूट विश्वास (दैनिक प्रेरणा):** सायण लिखते हैं कि "आहुत्याधारमग्निं दृष्ट्वा शास्त्रप्रसिद्धं कर्मफलं स्मर्यते" — अर्थात्, यज्ञ की अग्नि को देखकर मनुष्य को यह स्मरण करना चाहिए कि मेरे द्वारा किए गए शुभ कर्मों का फल 'ऋत' (सत्य/निश्चित) है। यह मनुष्य को दैनिक जीवन में सकाम या निष्काम उत्तम कर्म करने की प्रेरणा देता है।
- दैनिक अग्निहोत्र:** "स्वे दमे वर्धमानम्" का आदेश है कि प्रत्येक गृहस्थ को प्रतिदिन अपने घर (यज्ञशाला) में अग्नि को आहुतियाँ देकर प्रज्वलित करना चाहिए। यह घर के वातावरण को शुद्ध करता है।
- अहिंसा का अभ्यास:** "अध्वराणाम्" शब्द स्मरण कराता है कि हमारे दैनिक कार्य और यज्ञ किसी भी प्रकार की हिंसा (शारीरिक या मानसिक) से रहित होने चाहिए।

यह मन्त्र हमें भौतिक यज्ञ (अग्निहोत्र) से लेकर आध्यात्मिक ज्ञान (परमेश्वर की ज्योति) तक की यात्रा कराता है।